सहायक प्राध्यापक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम–दर्शनशास्त्र

1. प्राचीन भारतीय दर्शन

वैदिक एवं औपनिषद् विश्व-दृष्टि : ऋत—विश्वव्यवस्था दैवी एवं मानवीय क्षेत्र; यज्ञ संस्थान की केन्द्रीभूतता, ऋण की अवधारणा—कर्त्तव्य/नैतिक बाध्यता; सृष्टि के सिद्धान्त

आत्मा एवं अनात्मा, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय, ब्रह्म, श्रेयः तथा प्रेयः

कर्म, संसार, मोक्ष

चार्वाक : प्रत्यक्षमात्र प्रमाण, अनुमान तथा शब्द की समीक्षा, अभौतिक पदार्थों, धर्म तथा मोक्ष का निराकरण

जैन दर्शन : वस्तु की अवधारणा—सत्, द्रव्य, गुण, पर्याय, जीव, अजीव, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और नयवाद; ज्ञानमीमांसा, बन्ध एवं मोक्ष

बौद्धधर्म : चार आर्य सत्य, अष्टाङ्गमार्ग, निर्वाण, मध्यम प्रतिपद, प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणभङ्गवाद, अनात्मवाद

बौद्धदर्शन के सम्प्रदाय : वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक

न्याय : प्रमा तथा अप्रमा, प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य; प्रमाण : प्रत्यक्ष, निर्विकल्पक, सविकल्पक, लौकिक और अलौकिक; अनुमान : अन्वयव्यतिरेक, लिङ्गपरामर्श, व्याप्ति, वर्गीकरणः व्याप्तिग्रहोपाय, हेत्वाभास, उपमान; शब्द : शक्ति, लक्षणा, आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि तथा तात्पर्य, ईश्वर की अवधारणा : ईश्वर की अस्तित्वसिद्धि के लिए युक्तियाँ, अदृष्ट, निःश्रेयस

वैशेषिक : पदार्थों की अवधारणा, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, समवाय, विशेष, अभाव, कारणता : असत्कार्यवाद, समवायि, असमवायि, निमित्त कारण, परमाणुवाद

सांख्य : सत्कार्यवाद, प्रकृति और उसके परिणाम, प्रकृति की अस्तित्वसिद्धि के लिए युक्तियाँ, पुरुष का स्वरूप अस्तित्व और बहुत्व के लिए युक्तियाँ, पुरुष और प्रकृति का सम्बन्ध, कैवल्य, निरीश्वरवाद

योग : पतञ्जलि की चित्त और चित्त-वृत्तियों की अवधारणा, योग का अष्टाङ्गमार्ग, योग में ईश्वर की भूमिका

पूर्वमीमांसा

अदृष्ट एवं निःश्रेयस के प्रत्यय न्याय एवं वैशेषिक में लगभग समान ही है। वैशेषिक में उसे रखना आवश्यक नहीं है।

श्रुति तथा उसका महत्व, पूर्वमीमांसा का अनीश्वरवाद, श्रुतिवाक्यों का वर्गीकरण, विधि, निषेध और अर्थवाद, धर्म, भावना, शब्दनित्यवाद, जातिशक्तिवाद, स्वतः प्रामाण्य

मीमांसा के कुमारिल एवं प्रभाकर सम्प्रदाय तथा उनके प्रमुख मतभेद, त्रिपुटी-संवित्, ज्ञातता, अभाव और अनुपलब्धि, अन्विताभिधानवाद, अभिहितान्वयवाद

वेदान्त

अद्वैत : भेद निरास : अध्यास, माया, सत्ता त्रैविध्य, जीव, ब्राह्मण, मोक्ष की अवधारणा एवं उसके प्राप्ति के उपाय, जीवन्मुक्ति, विवर्तवाद

विशिष्टाद्वैत : सगुण ब्रह्म, माया का निराकरण, अपृथक्सिद्धि, परिणामवाद, जीव, भक्ति एवं प्रपत्ति

द्वैत : निर्गुण ब्रह्म एवं माया का निराकरण, भेद तथा साक्षी, भक्ति

2. आधुनिक भारतीय चिन्तक

विवेकानन्द : व्यावहारिक वेदान्त, सार्वभौम धर्म

अरविन्द : विकास, मन और अतिमानस समग्र योग

इकबाल : आत्मा, ईश्वर, मानव और अतिमानव

टैगोर : मानवधर्म, शिक्षा सम्बन्धी विचार

के० सी० भट्टाचार्य : दर्शन की अवधारणा, विषय के स्वतंत्र अस्तित्व की मान्यता, मायावाद

राधाकृष्णन् : बुद्धि तथा अन्तर्प्रज्ञा, जीवन की आदर्शपरक दृष्टि

जे० कृष्णमूर्ति : क्षेयस्वातंत्र्य, आलयविश्लेषण

गाँधी : अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, आधुनिक सभ्यता की समीक्षा

अम्बेडकर : वर्ण एवं जाति व्यवस्था, नव्य-बौद्धवाद

3. प्राचीन पाश्चात्य दर्शन

प्राचीन ग्रीक दार्शनिक, प्लेटो और अरस्तू

आयोनिअन्स, पायथागोरस, पारमनाइडस, हेराक्लिटस और डेमॉक्रिटस

सोफिस्ट और सुकरात

प्लेटो : ज्ञानमीमांसा, ज्ञान (epistemo) और मत (doxa), प्रत्यय सिद्धान्त, द्वन्द्वात्मकता की पद्धति, आत्मा और ईश्वर

अरस्तू : विज्ञानों का वर्गीकरण, सैद्धान्तिक, व्यावहारिक तथा औत्पादिक, तर्कशास्त्र का अंगीभूत स्वरूप, प्लेटो के प्रत्यय सिद्धान्त की आलोचना, कारणता सिद्धान्त, आकार एवं जड़द्रव्य, संभाव्यता एवं साकारता, आत्मा और ईश्वर

मध्यकालीन दर्शन

सेंट ऑगस्टीन : अशुभ की समस्या

सेंट ऑन्सेल्म : सत्ताशास्त्रीय युक्ति

सेंट थॉमस अक्विनास : श्रद्धा और बुद्धि, सारतत्त्व एवं अस्तित्व, ईश्वर का अस्तित्व

4. आधुनिक पाश्चात्य दर्शन

बुद्धिवाद

डेकार्त : दार्शनिक पद्धति की अवधारणा और दर्शन के लिए पद्धति की आवश्यकता, सत्य की कसौटी के रूप में स्पष्टता और सुनिश्चितता, संशय एवं संशयवाद, 'कोजिटो'—अंतःप्रज्ञा या अनुमान? जन्मजातक प्रत्यय, 'सत्' मन और जड़द्रव्य में भेद, ईश्वर की भूमिका, ईश्वर के अस्तित्व के लिए युक्तियाँ, देह-मन अन्तर्क्रियावाद

स्पिनोजा : द्रव्य, गुण व पर्याय, 'ईश्वर या निसर्ग' की अवधारणा, देह-मन समस्या, सर्वेश्वरवाद, ज्ञानप्रक्रिया के तीन स्तर

लाइब्नीज : मोनेडोलॉजी (चिदणुवाद), बुद्धि तथा तथ्य विषयक सत्यों में भेद, प्रत्ययों का जन्मजात रूप, ईश्वर के अस्तित्व के लिए युक्तियाँ, अविरोध, पर्याप्त कारण तथा अविछन्नों में तादात्म्य के तत्व, पूर्व-स्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त, स्वातंत्र्य तथा दर्शन की समस्या

अनुभववाद

लॉक : प्रत्यय तथा उनका वर्गीकरण, जन्मजात प्रत्ययों की आलोचना, ज्ञानमीमांसा; ज्ञान के तीन स्तर, द्रव्य विषयक सिद्धान्त, प्राथमिक तथा गौण गुणों में भेद

बर्कले : प्राथमिक तथा गौण गुणों का खण्डन, अभौतिकवाद, अमूर्त प्रत्ययों की आलोचना, दृष्टि-सृष्टिवाद (एसे-एस्ट-पर्सिपाय), अहंमात्रतावाद की समस्या, ईश्वर और आत्म

ह्यूम : प्रत्यय एवं संस्कार, प्रत्यय-विषयक सम्बन्ध तथा वस्तुस्थिति-विषयक सम्बन्ध का ज्ञान, आगमन तथा कारणता, बाह्य जगत् एवं आत्म, वैयक्तिक तादात्म्य, तत्त्वमीमांसा का खण्डन, संशयवाद, बुद्धि एवं भावना

समीक्षादर्शन और तदुपरान्त

काण्ट : समीक्षादर्शन, निर्णयों का वर्गीकरण, संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय की सम्भावना, कोपर्निकीय क्रांति, इंद्रिय अनुभव के माध्यम, बुद्धि की मूल धारणाएँ, प्रपंचात्मक एवं मूल वस्तुएँ, तथ्य और परासत, बुद्धि के प्रत्यय—आत्मा, ईश्वर तथा सम्पूर्ण, जगत्, स्वातंत्र्य एवं अमरता, संकल्पनात्मक तत्त्वमीमांसाशास्त्र का खण्डन

हेगेल : आत्मा (चित्ति) की अवधारणा; द्वन्द्वात्मक प्रणाली, सत्ता, असत्ता तथा संघटना की अवधारणाएँ, निरपेक्ष प्रत्ययवाद

नीत्शे : पश्चिमी सभ्यता की आलोचना, सामर्थ्य-संकल्प

मूर : प्रत्ययवाद का खण्डन, सामान्य समझ का समर्थन, दर्शन और विश्लेषण

रसेल : प्रत्ययवाद का खण्डन, दर्शन के सार रूप में तर्कशास्त्र, तार्किक अणुवाद

विट्गेन्स्टाईन : भाषा और सत्यापन, तथ्य और विषय, नाम और प्रतिज्ञप्तियाँ, चित्र सिद्धान्त, दर्शन और भाषा, शब्दार्थ और उपयोग, जीवन के प्रकार

हुसर्ल : हुसर्ल की प्रणाली, विषयोन्मुखता (विषयाभिगतता या अभिप्राय)

हाइडेगर : सत्ता और असत्ता, जगत् में स्थापित सत्ता के रूप में मनुष्य, तकनीकी सभ्यता की आलोचना

तर्कीय प्रत्ययवाद : अर्थ का सत्यापनता सिद्धान्त, सत्यापन का तत्त्व, तत्त्वमीमांसा का खण्डन, विज्ञानों का एकीकरण

सी० एस० पीअर्स और विलियमजेम्स : अर्थ तथा सत्य के अर्थक्रियात्मक सिद्धान्त

जी० राइल : भ्रामक अभिव्यक्तियों का सिद्धान्त, श्रेणीपरक भूल, मन की अवधारणा, डेकार्टीय द्वैतवाद की आलोचना

इकाई—I

व्यावहारिक तथा पारमार्थिक सत्ता
नित्य एवं अनित्य द्रव्य
कारणता
आकाश, दिक् तथा काल
सामान्य एवं सम्बन्ध
चित्, अचित् तथा आत्मन्

इकाई—II

आभास और सत्
सत् एवं संघटना (बिकमिंग)
कारणता, देश तथा काल
जड़तत्व, मन (माइन्ड) एवं आत्म
द्रव्य तथा सामान्य (सार्वभौम प्रत्यय)
वैयक्तिक तादात्म्य (पर्सनल आइडेन्टीटी) की समस्या

इकाई—III

प्रमा
प्रमाण के प्रकार
ख्यातिवाद

प्रामाण्यवाद
अन्विताभिधानवाद एवं अभिहितान्वयवाद
शब्दग्रह

इकाई—IV

ज्ञान की परिभाषा
ज्ञान के साधन
भ्रान्ति के सिद्धान्त
सत्य के सिद्धान्त
विश्वास तथा संदेहवाद
आगमन की समस्या

इकाई—V

न्याय में प्रत्यक्ष की अवधारणा
बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष की अवधारणा
शांकर वेदान्त में प्रत्यक्ष की अवधारणा
अनुमान का स्वरूप एवं प्रकार
व्याप्ति की परिभाषा एवं स्वरूप
हेत्वाभास

इकाई—VI

ऋण तथा ऋत
पुरुषार्थ, स्वधर्म
वर्ण-धर्म तथा आश्रमधर्म
निष्कामकर्म एवं लोकसंग्रह
पंचशील तथा त्रिरत्न
ब्रह्मविहार

इकाई—VII

शुभ, उचित, न्याय
कर्त्तव्य एवं नैतिक बाध्यता
प्रधान सद्गुण
युडामोनिज्म
स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व
अपराध एवं दंड

इकाई—VIII

नीतिशास्त्रीय संज्ञानवाद तथा असंज्ञानवाद
नीतिशास्त्रीय वस्तुवाद तथा अन्तर्प्रज्ञावाद
कांट का नैतिक सिद्धान्त
उपयोगितावाद के प्रकार
मानव अधिकार एवं सामाजिक असमानता
स्त्रीवाद

इकाई—IX

सत्य एवं वैधता
तर्कवाक्य का स्वरूप
निरपेक्ष न्यायवाक्य
विचार के नियम
तर्कवाक्यों का वर्गीकरण
विरोध का चतुष्कोण

इकाई—X

तार्किक फलन एवं विधान-तर्कशास्त्र
परिमाणन एवं परिमाणन के नियम
निर्णय की प्रक्रिया
वैधता की सिद्धान्त
युक्तिवाद तथा युक्तिवाद का आकार
स्वयंसिद्ध प्रणाली, सुसंगति, पूर्णता

ऐच्छिक—I

[धर्मों के निम्नलिखित समूहों के मुख्य सिद्धान्तों एवं अनुष्ठानों से परीक्षार्थियों के परिचित होने की अपेक्षा की जाती है : (1) हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं सिक्ख धर्म; (2) यहूदी धर्म, पारसी धर्म, ईसाई धर्म तथा इस्लाम; (3) भारत के आदिवासी धर्म।

तुलनात्मक धर्म की सम्भावना एवं आवश्यकता, धर्मों के मध्य समानता तथा भिन्नता, अन्तर-धार्मिक (अन्तःधार्मिक) संवाद एवं साक्षात्कार का स्वरूप, धार्मिक अनुभव, दिव्य के अवबोध के प्रकार, मोक्ष का सिद्धान्त, मोक्ष-प्राप्ति के साधन, धर्मों में ईश्वर तथा मानव का सम्बन्ध, धर्मों में विश्व-दृष्टि, अमरत्व, अवतारवाद तथा पैगम्बरवाद के सिद्धान्त, धार्मिक शब्दार्थमीमांसा, धर्म तथा नैतिक सामाजिक मूल्य, धर्म एवं धर्मनिरपेक्ष समाज।

ऐच्छिक—II

सामान्य :

भाषायी मोड़ (प्रवृत्ति) एवं दर्शन की अवधारणा

समस्याएँ :

शब्दार्थशास्त्र : प्रयुक्त शब्द (सेन्स) तथा शब्द-निर्देश (रेफरेन्स) में फ्रेगेकृत भेद; अवधारणाएँ तथा वस्तुएँ, सम्बद्ध समस्याएँ तथा उसके प्रस्तावित समाधान : (a) तादात्म्य, (b) निषेधात्मक अस्तित्वपरक तत्व, (c) अप्रत्यक्ष वाणी, (d) प्रतिज्ञप्तात्मक अभिवृत्ति, एकान्तिक (सिंग्यूलर) पदों का अर्थ तथा भूमिका : (a) व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ अथवा नाम, (b) निश्चित वर्णन, (c) प्रदर्शनात्मक पद तथा अन्य अनुक्रमणिक पद; अर्थ एवं सत्य के मध्य सम्बन्ध, अर्थ-विषयक समग्रतापरक तथा आणविक दृष्टि, अर्थ का सिद्धान्त क्या है?

क्रियात्मकताशास्त्र : अर्थ तथा अनुप्रयोग, वाणी के कार्य

[उपर्युक्त समस्यात्मक क्षेत्रों के सम्बन्ध में अभ्यर्थी का फ्रेगे, रसल, विट्गेन्स्टाइन, ऑस्टिन, क्वॉइन, स्ट्रॉसन, डेविडसन, डमूएट तथा सर्ल के ग्रंथों से परिचित होना अपेक्षित है।

ऐच्छिक—III

[इस समूह का उद्देश्य फिनोमिनोलॉजी तथा शब्दार्थमीमांसा की केन्द्रीय अवधारणाओं विषयक परीक्षार्थी के ज्ञान का आकलन है।]

मानवीय दशा के बोध के प्रयास के रूप में फिनोमिनोलॉजी, चेतना तथा अभिप्राय/साभिप्रायता, फिनोमिनोलॉजी तथा अहंमात्रतावाद, जीवन-विश्व, व्याख्या, बोध तथा मानव विज्ञान, मूल ग्रंथ का प्रत्यय, व्याख्या में मतभेद तथा सहमति की सम्भावना, संस्कृति, परिस्थिति संलग्नता तथा व्याख्या।

ऐच्छिक—IV

[यह प्रश्न-पत्र आचार्य शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क तथा वल्लभ के विशेष संदर्भ में वेदान्त दर्शन से संबंधित है। इसका उद्देश्य अभ्यर्थियों के वेदान्त दर्शन के विभिन्न रूपों तथा उनके समृद्ध दर्शन के ज्ञान के परीक्षण में निहित है।]

स्रोत, सामान्य विशेषताएँ, समानताएँ एवं उनके पारस्परिक मतभेद, ब्रह्म : लक्षण तथा व्याख्याएँ, सगुण एवं निर्गुण का भेद तथा वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों की संघटना में इसकी प्रासंगिकता, माया : स्वरूप, माया की समर्थक तथा विरोधी युक्तियाँ, आत्मा : स्वरूप, आत्मा तथा ब्रह्म का सम्बन्ध, जीव, 'तत् त्वम् असि' आदि महावाक्यों की व्याख्या, मोक्ष : स्वरूप एवं प्रकार, मार्ग अथवा साधना, ज्ञान, कर्म और भक्ति की भूमिका, भक्ति सम्बन्धी विभिन्न अवधारणाएँ, कारणता के सिद्धान्त, जगत् के कारण के रूप में ब्रह्म : विभिन्न व्याख्याएँ, प्रमा, प्रमाण, शब्द प्रमाण तथा अपरोक्षानुभूति की विशिष्ट भूमिका, ख्याति के सिद्धान्त।

ऐच्छिक—V

[इसका उद्देश्य दर्शनशास्त्र के प्रमुख वाद-विवाद में गाँधी के विचारों की उपलब्धि की सम्भावना है।]

ज्ञान, सत्य तथा प्रेम एवं उनके पारस्परिक सम्बन्ध की अवधारणाएँ, भाषा, अवबोध एवं संस्कृति, परम्परा से सम्बन्ध, आत्मा, जगत् और ईश्वर, नारी, कामुकता तथा ब्रह्मचर्य, आदर्श जीवन के नैतिक आधार : धर्म, स्वराज, सत्याग्रह तथा अहिंसा, समुदाय तथा बंधुत्व, आदर्श समाज : राज्यविहीनता, न्यासिता, सर्वोदय, पंचायती राज, धर्म, तपस्या, सेवा, साधन-साध्य सम्बन्ध, गाँधी एवं गाँधीवादी : अवरोध, नैरन्तर्य तथा नवीकरण।

ऐच्छिक—VI

समाज एवं राज-दर्शन- यह प्रश्नपत्र सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों का दार्शनिक विवेचन तथा परीक्षण करना है।

Assistant Professor Written Examination
Syllabus of Philosophy

1. Classical Indian Philosophy

Vedic and Upanisadic world-views : *Ṛta*—the cosmic order, the divine and the human realms; the centrality of the institution of *yajña* (sacrifice), the concept of *ṛna*—duty/obligation; theories of creation

Ātman—Self (and not-self), *jāgrat*, svapna, *suṣupti* and *turīya*, *Brahman*, *śreyas* and *preyas*

Karma, *saṃsāra*, *mokṣa*

Cārvāka : *Pratyakṣa* as the only *pramāṇa*, critique of *anumāna* and *śabda*, rejection of non-material entities, *dharma* and *mokṣa*

Jainism : Concept of reality—*sat*, *dravya*, *guṇa*, paryāya, *jīva*, *ajīva*, *anekāntavāda*, *syādvāda* and *nayavāda*; theory of knowledge; bondage and liberation

Buddhism : Four noble truths, *aṣṭāngamārga, nirvāṇa, madhyama pratipad, pratītyasamutpāda, kṣaṇabhaṅgavāda, anātmavāda*

Schools of Buddhism : *Vaibhāṣika, Sautrāntika, Yogācāra* and *Mādhyamika*

Nyāya : *Pramā* and *apramā, prāmāṇya* and *aprāmāṇya; pramāṇas : pratyakṣa, nirvikalpaka, savikalpaka, laukika* and *alaukika; anumana : anvayavyātireka, lingaparāmarśa, vyāpti*: classification : *vyāptigrahopāyas, hetvābhāsa, upamāna; śabda : Śakti, lakṣaṇā, ākāṅkṣā, yogyatā, sannidhi* and *tātparya*, concept of God, arguments for the existence of God, *adṛṣṭa, nihśreyasa*

Vaiśeṣika : Concepts of *padārtha, dravya, guṇa, karma, sāmānya, samavāya, viśeṣa, abhāva*, causation : *Asatkāryavāda, samavāyi, asamavāyi nimitta kāraṇa, paramāṇuvāda, adṛṣṭa, nihśreyas*

Sāṃkhya : *Satkāryavāda, prakṛti* and its evolutes, arguments for the existence of *prakṛti*, nature of *puruṣa*, arguments for the existence and plurality of *puruṣa* relationship between *puruṣa* and *prakṛti, kaivalya*, atheism

Yoga : Patanjali's concept of *citta* and *citta-vṛtti*, eight-fold path of yoga, the role of God in *yoga*.

Pūrva-Mimāṃsā

Śruti and its importance, atheism of *pūrvamīmāṃsā*, classification of *śrutivākyas, vidhi, niṣedha* and *arthavāda, dharma, bhāvanā, sabdānityavāda, jātiśaktivāda*, swatah-pramanya.

Kumarila and Prabhakara Schools of *mīmāṃsā* and their major points of difference, *tripuṭi-saṃvit, jñātatā, abhāva* and *anupalabdhi, anvitābhidhanavāda, abhitānvayavāda*

Vedānta

Advaita—Rejection of difference : *Adhyāsa, māyā*, three grades of *satta, jiva*, brahman, concept of muksha and its path, *jivanmukti, vivartavāda*

Viśiṣṭādvaita : *Saguṇa Brahman*, refutation of *māyā, apṛthaksiddhi, parināmavāda, jiva*, bhakti and *prapatti*

Dvaita—Rejection of *nirguṇa brahman* and *māyā*, bheda and *sākṣi bhakti*

2. Modern Indian Thinkers

Vivekananda—Practical vedanta, universal religion

Aurobindo—Evolution, mind and supermind, integral yoga

Iqbal—Self, God, man and superman

Tagore—Religion of man, ideas on education

K. C. Bhattacharyya—Concept of philosophy, subject as freedom, the doctrine of *māyā*.

Radhakrishnan—Intellect and intuition, the idealist view of life

J. Krishnamurti—Freedom from the known, analysis of self

Gandhi—Non-violence, satyāgraha, swaraj, critique of modern civilization

3. Classical Western Philosophy

(i) Early Greek philosophers

Ionians, Pythagoras, Parmenides, Heraclitus and Democritus

The Sophists and Socrates

Plato—Theory of knowledge, knowledge (*episteme*) and opinion (*doxa*), theory of Ideas, the method of dialectic, soul and God

Aristotle—Classification of the sciences, the theoretical, the practical and the productive (*theoria, praxis, techne*), logic as an organon, critique of Plato's theory of ideas, theory of causation, form and matter, potentiality and actuality, soul and God

(ii) Medieval Philosophy

St. Augustine—Problem of evil

St. Anselm—Ontological argument

St. Thomas Aquinas—Faith and reason, essence and existence, the existence of God

4. Modern Western Philosophy

Rationalism

Descartes : Conception of method and the need for method in philosophy, clarity and distinctness as the criterion of truth, doubt and methodological scepticism, the *cogito*—[illegible]? innate ideas, the 'real' distinction between mind and matter, role of God, proofs for the existence of God, mind-body interactionalism

Spinoza : Substance, Attribute and Modes, the concept of 'God or Nature', the mind-body problem, pantheism, three orders of knowing

Leibniz : Monadology, truths of reason and truths of fact, innateness of all ideas, proofs for the existence of God, principles of non-contradiction, sufficient reason and identity of indiscernibles, the doctrine of pre-established harmony, problem of freedom and philosophy

Empiricism

Locke : Ideas and their classification, refutation of innate ideas, theory of knowledge, three grades of knowledge, theory of substance, distinction between primary and secondary qualities

Berkeley : Rejection of the distinction between primary and secondary qualities, immaterialism, critique of abstract ideas, *esse est percipi*, the problem of solipsism; God and self

Hume : Impressions and ideas, knowledge concerning relations of ideas and knowledge concerning matters of fact, induction and causality, the external world and the self, personal identity, rejection of metaphysics, scepticism, reason and the passions

Critical Philosophy and After

Kant : The critical philosophy, classification of judgements, possibility of synthetic *a priori* judgements, the Copernican revolution, forms of sensibility, categories of understanding, the metaphysical and the transcendental deduction of the categories, phenomenon and noumenon, the Ideas of Reason—soul, God and world as a whole, freedom and immortality, rejection of speculative metaphysics

Hegel : The conception of *Geist* (spirit), the dialectical method, concepts of being, non-being and becoming, absolute idealism

Nietzsche : Critique of western culture, will to power

Moore : Refutation of idealism, defence of commonsense, philosophy and analysis

Russell : Refutation of idealism, logic as the essence of philosophy, logical atomism

Wittgenstein : Language and reality, facts and objects, names and propositions, the picture theory, philosophy and language, meaning and use, forms of life

Husserl : The Husserlian method, intentionality

Heidegger : Being and nothingness, man as being-in-the-world, critique of technological civilization

Logical Positivism : The verifiability theory of meaning.. the verification principle, rejection of metaphysics, unity of science

C. S. Pierce and William James : Pragmatic theories of meaning and truth

G. Ryle : Systematically misleading expresions, category mistake, concept of mind, critique of Cartesian dualism

Unit—I

Vyāvahārika and Pāramārthika Sattā

Nitya and anitya Dravya

Kāraṇatā

Ākāśa, Dik and Kāla

Sāmānya and Sambandha

Cit, Acit and Ātman

Unit—II

Appearance and reality

Being and becoming

Causality, Space and Time

Matter, Mind and Self

Substance and Universals

The problem of personal identity

Unit—III

Pramā

Kinds of Pramāṇas

Khyātivāda

Prāmāṇyavāda

Anvitābhidhānavāda and Abhihitānvayavāda

Śabdagraha

Unit—IV

Definition of knowledge
Ways of knowing
Theories of error
Theories of truth
Belief and scepticism
Problem of induction

Unit—V

Concept of Pratyakṣa in Nyāya
Concept of Pratyakṣa in Buddhism
Concept of Pratyakṣa in Śaṁkara Vedānta
Nature and kinds of Anumāna
Definition and Nature of Vyāpti
Hetvābhāsas

Unit—VI

Ṛṇa and Ṛta
Puruṣārthas, Svadharma
Varṇadharma and Āśramadharma
Niṣkāmakarma and Lokasaṁgraha
Pañcaśīla and Triratnas
Brahmavihāras

Unit—VII

Good, right, justice
Duty and obligation
Cardinal virtues
Eudaemonism
Freedom and responsibility
Crime and punishment

Unit—VIII

Ethical cognitivism and non-cognitivism
Ethical realism and intuitionism
Kant's moral theory

Kinds of utilitarianism

Human rights and social disparities

Feminism

Unit—IX

Truth and validity

Nature of propositions

Categorical syllogism

Laws of thought

Classification of propositions

Square of opposition

Unit—X

Truth-functions and propositional logic

Quantification and rules of quantification

Decision procedures

Proving validity

Argument and Argument-form

Axiomatic system, consistency, completeness

Elective—I

[Candidates will be expected to be familiar with the main tenets and practices of the following groups of religions : (1) Hinduism, Buddhism, Jainism and Sikhism; (2) Zoroastrianism, Judaism, Christianity and Islam; (3) tribal religions of India]

Possibility and need of comparative religion, commonality and differences among religions, the nature of inter-religious dialogue and understanding, religious experience, modes of understanding the divine, the theory of liberation, the means for attaining liberation, the God-man relation in religions, world-views (*Weltanschaunngen*) in religions, immortality, the doctrine of incarnation and prophethood, religious hermeneutics, religion and moral social values, religion and secular society

Elective—II

General :

The linguistic turn and the conception of philosophy

Problems :

Semantics : Frege's distinction between sense and reference, concepts and objects, related problems and their proposed solutions : (a) identity, (b) negative existentials, (c) indirect speech, (d) propositional attitudes, the meaning and role of singular terms : (a) Proper names; (b) definite descriptions, (c) demonstratives and other indexicals; the relation between meaning and truth, holistic and atomistic approach to meaning, what is a theory of meaning?

Pragmatics : Meaning and use; speech acts

[The above problem areas require candidate's familiarity with the works of Frege, Russell, Wittgenstein, Austin, Quine, Strawson, Davidson, Dummett and Searle.]

Elective—III

[The purpose here is to assess the candidate's acquaintence with the central concepts in phenomenology and hermeneutics]

Phenomenology as an approach to the understanding of the human condition, consciousness and intentionality, phenomenology and solipsism, the life-world (*Lebenswelt*), interpretation, understanding and the human sciences, the idea of the text, conflict of interpretation and the possibilities of agreement, culture, situatedness and interpretation

Elective—IV

[This covers vedanta philosophy with special reference to five main acharyas viz. Sankara, Ramanuja, Madhava, Nimbarka and Vallabha. The purpose is to test the candidate's acquaintance with vedanta philosophy in its rich and divergent forms]

Sources, general features, similarities and differences, Brahman : Definition and interpretations, distinction between *saguṇa* and *nirguṇa* and its relevance in the formation of different schools of vedanta, *māyā* : Its nature, arguments for and against *māyā*, *ātman* : Its nature, relation between *ātman* and *Brahman*; *jiva*; interpretation of *mahāvākyas*, e.g. tat tvam asi; *mokṣa* : Nature and types, *mārga* or *sādhanā*, roles played by *jñāna*, *karma* and *bhakti*, different conceptions of *bhakti*, theories of causation, *Brahman* as the cause of the world : Different interpretations, *pramā*, *pramāṇas*, special role played by *śabda pramāṇa* and intuition (*saksatkara/aparoksanubhuti*), theories of *khyātis*

Elective—V

[The intention here is to explore the availability of Gandhian ideas in the central debates in philosophy]

Conceptions of knowledge, truth and love and their relationship, language, understanding and culture, engagement with tradition, self, world and God, woman, sexuality and brahmacharya, moral foundations of good life : Dharma, swaraj, satyagraha and ahimsa, community and fellowship; the good society : statelessness, trusteeship, sarvodaya, panchayati raj, religion, tapasya, service, means-end relationship, Gandhi and the Gandhians : break, continuity and innovation

Elective—VI

Social and Political Philosophy.